कचड़ा फैलाने का समय नहीं

बाइबल में, उपयोग के बाद बचने वाले कचडे के बारे में सीधे कुछ नहीं लिखा है। भौतिक/सांसारिक सम्पत्ति का अपना एक बड़ा मूल्य है – हालांकि उसका महत्व आत्मिक धन से बढ़ कर नहीं है (मत्ती 6:19–20, लूका 12:16–21) – इसलिए कुछ त्यागने की धारणा का वर्णन नहीं है। उस समय में एक बार उपयोग की जाने वाली प्लास्टिक या पैकिंग नहीं होती थी, कोई औध्योगिक प्रक्रिया नही थीं और चीज़ों की खपत भी बहुत कम थी।

इसका यह अर्थ नहीं है कि इस विषय को सम्बोधित नहीं किया गया है, विशेषकर यदि हम भन्ड़ारीपन के विषय का अर्थ एक बड़े रूप मे देखें तो इस विषय को ज़रूर सम्बोधित किया गया है। पांच हजार लोगों को भोजन कराने की घटना में हम देखते हैं कि बाइबल मे इस प्रकार लिखा है कि ''तब यीशु ने रोटियां ली और धन्यवाद करके बैठने वालों को बांट दी, और वैसे ही मछलियों में से जितनी वो चाहते थे बांट दिया। जब वो खा कर तृप्त हो गए तो उसने अपने चेलों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए। सो उन्होंने बटोरा, और जब की पांच रोटियों के टुकड़े जो खाने वालों से बच रहे थे उन की बारह टोकरियां भरीं।

यह पुराने नियम लैव्यव्यवस्था 23:22 और व्यवस्थाविवरण 24:19 से मेल खाता है जहां लिखा है कि बची हुए चीज़ों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाये ''जब तुम अपने देश के खेत काटो, तब अपने खेत के कोनों को पूरी रीति से न काटना, और खेत मे गिरी हुई बालों को न इकट्ठा करना, उसे दीन हीन और परदेशी के लिये छोड़ देना, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं।'' – लैव्यवस्था 23:22

जब तू अपने पक्के खेत को काटे, और एक पूला भूल से खेत मे छूट जाए, तो उसे लेने को फिर न लौट जाना, वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिए पड़ा रहे, इसलिए कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझ को आशीष दे। – व्यवस्थाविवरण 24:19

गरीबों की दुर्दशा को नज़रअन्दाज करके अत्यधिक खपत करना और फिर उसकी बर्बादी करना, परमेश्वर से अलग हो कर अपनी व्यक्तिगत अभिलाषाओं को पूरा करना और साथ ही दूसरों की और इस धरती की हानि करना ये सभी पाप से बन्धे हुए हैं। पुराने नियम मे जिस बात के लिए कहा गया है कि खेत के कोनों को और पूला छोड़ देना उसकी प्रतिध्वनि आज भी गूंज रही है जहां आज हम अपनी आवश्यकता से अधिक की खरीदारी करते हैं और चीज़ों को बर्बाद करके उसको फेंक देते हैं, हम धरती की 1/3 पैदावार को बर्बाद करते हैं जो कि खेत के कोनों को और पूलों को छोड़ने से कहीं ज्यादा है।

चीजो की बर्बादी और अन्याय पूरे पुराने नियम मे दिखता है – नीतिवचन 13:23 मे लिखा है ''निर्बल लोगों को खेती बारी से बहुत भोजनवस्तु मिलती है, परन्तु ऐसे लोग भी हैं जो अन्याय के कारण मिट जाते हैं।''गरीब किसान पूरे विश्व भर मे अमीर संस्थाओं द्वारा बाहर ढ़केल दिये जाते हैं, ऐसे लोग जो ज़मीन को हानिकारक कीटनाशक द्वारा, वनो की कटाई द्वारा, और जैवविधिता को खत्म करने के द्वारा हानि पहुंचाते हैं।''

हम जो भोजन आजकल खरीदतें है वो प्लास्टिक के डब्बों मे या अन्य प्लास्टिक की चीज़ों द्वारा पैक किये जाते हैं जिससे वो सुन्दर दिखायी दें, लेकिन इस प्रकार की चीज़ों से प्लास्टिक का कचड़ा बढ़ेगा जो वर्षों तक सड़ेगा नहीं (जैसे कि फल, और सब्ज़ियों के छिलके सड़ जाते हैं।) हमारा समाज शहरीकरण और उपभोक्तावाद के कारण मौसम के साथ अपने सम्पर्क को खो चुका है, आज हम एक चीज़ की मांग पूरे वर्ष भर करते है, चाहे उस चीज़ का मौसम हो या न हो। वैसे ही हम स्व–केन्द्रित और उपभोक्तावादी विचारधारा के कारण कपड़े खरीदते जाते हैं और उसको फेंक देते हैं, बिना विचार किये कि उसको बनाने में पर्यावरण कितना प्रभावित हुआ होगा और जो लोग उसको बनाते हैं उनको कितनी क्षति पहुंचती होगी।

कई बार जब हमारे ऊपर पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तो हम चिन्तित हो कर पुनःउपयोग करें जैसे शब्दों को ज्यादा फोकस करते हैं, इस बात पर विचार नहीं करते हैं कि पुनः उपयोग में लाये जाने वाली वस्तुओं को कहां बनाया जाता है? और इसको पुनः उपयोग मे लाने योग्य बनाने के लिए चीज़ों को उत्पादन की एक प्रक्रिया से गुज़रना होता है। इससे अलग हमारा स्वभाव ऐसा होना चाहिए कि हम अपने खपत को कम करें। एक बार उपयोग मे आने वाली प्लास्टिक को लेने से और उसका उपयोग करने से मना कर दें, और जब हम पुरानी चीज़ों का पुनः उपयोग कर सकते हैं तो नयी चीज़ों को न खरीदें।

पृथ्वी के साथ हमारा सम्बन्ध खंड़ित हो चुका है, और हमारे द्वारा फैलायी गयी गन्दगी इस बात का चिह्न है कि हमने प्रदूषण बढाया है। गिनती की पुस्तक 35:33 मे लिखा है ''इसलिए जिस देश में तुम रहोगे उसको अशुद्ध न करना, खून से तो देश अशुद्ध हो जाता है, और जिस देश में जब खून किया जाए तब केवल खूनी के लहू बहाने ही से उस देश का प्रायश्चित हो सकता है। जिस देश मे तुम निवास करोगे उसके बीच मैं रहूंगा, उसको अशुद्ध न करना, मैं यहोवा तो इस्राएलियों के बीच रहता हूं।''

यह पद हत्या के विषय में और इस्राएलियों के शरणार्थी शहर के विषय में बात करता है – फिर भी यह एक गहरी सच्चाई के विषय में बात करता है – ''पृथ्वी पर मनुष्यों की उपस्थिति पृथ्वी की देख–भाल कर सकती है या उसको दूषित कर सकती है''।

आज के परिप्रेक्ष मे ये सभी विषय – शोषण, हत्या, और अन्याय बहुत अधिक प्रासंगिक हैं जो धरती को दूषित करते हैं। इसके अतिरिक्त, हमारी खपत वही कार्य करती है, विश्व भर में 4 में से 1 लोगों का कचड़ा नहीं उठाया जाता है और उनका ढ़ेर हमारे शहरों मे कचड़े के ढ़ेर के रूप मे खड़ा रहता है। (हम इस बात की कोई चिन्ता नहीं करते कि इन कचड़े के ढ़ेर का कितना गम्भीर प्रभाव पड़ रहा है।) भारत मे कचड़ा उठाने वाले लोगों की संख्या 15,00,000, से 40,00,000 है और ये लोग मिलकर एक वर्ष में फैलने वाले 620 लाख टन कचड़े को उठाते हैं। और जब ये लोग हमारे कचड़े को अलग – अलग करते हैं और हमारी नगरपालिका को कीमती सहायता देते हैं उनको मजबूरन जोखिम भरी परिस्थिति में जाना पड़ता है जहां उनको गन्दी बदबू, जंगली कुत्तों ,चोट लगने के खतरों और विभिन्न बिमारियों के संक्रमण के खतरों से गुज़रना होता है और ये सब जोखिम वो बिना किसी अच्छी तनख्वाह प्राप्त किये और बिना किसी बचाव सहायता के करते हैं। इन सब के अतिरिक्त उनको समाज द्वारा किये गये भेद – भाव को भी झेलना पड़ता है। इस प्रकार उन लोगों के प्रति जो हमारा कचड़ा उठाते हैं, अलग करते हैं उनके प्रति सहानुभूति और सम्मान न दिखाना ही अपने आप में एक पाप है।

यदि हम बाइबल के आरम्भ में उत्पत्ति 2 अध्याय में जायें तो वहां लिखा है '' तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को ले कर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।'' यह उत्पत्ति 1:28 में दी गयी जिम्मेदारी को विस्तार देता है जहां लिखा है '' और परमेश्वर ने उनको आशीष दी और उनसे कहा, फूलो फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो, और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।'' यह पृथ्वी के भंडारीपन के लिए बाइबल में पाये जाने वाला एक महत्वपूर्ण आधारिक पद है, फिर भी हम इन पदों मे पाये जाने वाले वश मे करना, अधिकार रखना जैसे शब्दों का गलत अर्थ निकालते हैं और कठोरता का व्यवहार करते हैं। जबकि हम यह जानते हैं कि परमेश्वर के राज्य को ऐसा नहीं दिखना चाहिए इसलिए एक अच्छे संरक्षक के समान जिनको परमेश्वर की सृष्टि की देखभाल के लिए रखा गया है हमें कुछ अलग उदाहरण रखना होगा।

भजन 72 जिसको सुलेमान का भजन कहा गया है वो परमेश्वरीय अधिकार को सुन्दर रीति से प्रस्तुत करता है– ''वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा''। (पद 8) और यह भी लिखा है कि '' क्योंकि वो दोहाई देने वाले दरिद्र को, और दुःखी और असहाय मनुष्य का उद्धार करेगा। वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा, और दरिद्रों के प्राण को बचाएगा। वह उनके प्राणों को अन्धेर और उपद्रव से छुड़ा लेगा, और उनका लहू उसकी दृष्टि में अनमोल ठहरेगा।''(पद 12–14)

हमारा पृथ्वी के साथ सम्बन्ध एक संरक्षक/भंड़ारी का होना चाहिए न कि लूका 16 अध्याय मे वर्णित बेईमान भंड़ारी के समान जिसने अपने स्वामी की सम्पत्ति को बर्बाद किया और कम करके लिखा जिससे वो अपना कर्जा चुका सके, बल्कि इसके विपरीत हमें परमेश्वर के अच्छे भण्ड़ारी बनना है जो कि इस बात को सम्मलित करता है कि हम किस प्रकार चीज़ों की खपत कैसे, कितनी और क्यों कर रहे हैं। हमे उन लोगों का सम्मान करना चाहिए न कि शोषण करना चाहिए जो हमारे उपयोग की चीजे उत्पादित करते हैं, भूमि के नवीनीकरण को अनुमति दें न कि उसको दूषित करें, हमारे द्वारा फैलाये गये कचड़े को कम करे, और जिन चीजो का हम बनाते हैं उपयोग करते हैं उनके साथ उचित व्यवहार करें।

धर्मशास्त्रीय भंड़ारीपन सभी के लिए न्याय, समस्त सृष्टि की देखभाल करना, और लोगों के साथ, जानवरो के साथ और पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र के साथ सही व्यवहार रखना है।